मचंद की कहानियों में चित्रित किसान जीवन

डॉ. के.पी. शहा,
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय,
कोल्हापुर ।
तथा
स्नातकोत्तर अध्यापक एवं
शोध-निर्देशक,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर । (महाराष्ट्र)

प्रमाणपत्र

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि प्रा. लालासाहेब इंद्रराव धोरपडे ने शिवाजी विश्वविद्यालय की एम्. फिल. (हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु-शोध प्रबन्ध ` प्रेमचन्द की कहानियों में चित्रित किसान जीवन ` मेरे निर्देशन में सफलतापूर्वक पूरे परिश्रम के साथ पूरा किया है । प्रा. लालासाहेब इंद्रराव धोरपडे के प्रस्तुत शोध कार्य के बारे में मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ ।

(डॉ. के.पी. शहा)
शोध निर्देशक

कोल्हापुर ।

दिनांक : 25-11-91

अनुक्रमणिका

	पृष्ठ क्रमांक
प्राक्कथन	1-5
प्रथम अध्याय : प्रेमचन्द व्यक्तित्व और कृतित्व	6-35
द्वितीय अध्याय : प्रेमचन्द पूर्व हिन्दी कहानी और प्रेमचन्द	36-50
तृतीय अध्याय : प्रेमचन्द कालीन परिस्थितियाँ अ) सामाजिक ब) धार्मिक क) आर्थिक ड) राजनीतिक	51-63
चतुर्थ अध्याय : प्रेमचन्द की कहानियों में चित्रित किसान जीवन - अ) सामाजिक जीवन ब) धार्मिक जीवन क) आर्थिक जीवन ड) राजनीतिक जीवन	64-193
उपसंहार	194-211
संदर्भ ग्रंथ सूची	212-215

प्राक्कथन

प्रा क्क थ न

मुंशी प्रेमचन्द हिन्दी साहित्य के बहुचर्चित एवं युगप्रवर्तक साहित्यकार रहे हैं। हिन्दी कथा साहित्य में उनका स्थान अनन्य साधारण महत्व रखता है। हिन्दी कथा साहित्य में उन्हें केंद्र में रखकर प्रेमचन्द पूर्व युग, प्रेमचन्द युग, प्रेमचन्दोत्तर युग इसप्रकार से काल विभाजन किया गया है। जिससे उनके युगान्तरकारी साहित्य का और व्यक्तित्व का महत्व स्पष्ट हो जाता है। उनका जो स्थान उपन्यास साहित्य में है, वही स्थान कहानी साहित्य में भी है। इसी कारण उन्हें ` उपन्यास सम्राट ` की तरह ` कहानी सम्राट ` भी कहा जाता है। उनकी रचनाएं हिन्दी साहित्य में बहुत बड़ी उपलब्धियाँ मानी जाती है।

प्रेमचन्दजी को पढ़ने का मौका स्कूल-कॉलेज की पढ़ाई के दौरान आया था। स्कूल में पढ़ते वक्त मैंने प्रेमचन्दजी की ` परीक्षा ` कहानी पढ़ी और मैं उनकी ओर आकर्षित हो गया। बाद में मैंने उनका थोड़ा बहुत साहित्य पढ़ लिया। कॉलेज में भरती होने के पश्चात मैंने उनकी ` बड़े घर की बेटी,`` बड़े भाई साहब,`` दूध का दाम,`` नमक का दारोगा,` जैसी कहानियां पढ़ी, और उनका अन्य साहित्य पढ़ने की इच्छा बलवती हो गयी। इसी दौरान मैंने ` गोदान,`` गबन,`` सेवासदन ` उपन्यास पढ़े। परिणामत: मेरे मन में उन पर शोध कार्य करने की इच्छा जागृत हुई। तभी एम्. फिल्. के लघु-शोध प्रबन्ध के लिए मैंने ` प्रेमचन्द की कहानियों में चित्रित किसान जीवन ` यह विषय निश्चित करने का फैसला किया, जिसे श्रध्देय गुरूदेव डॉ. के.पी. शाहा और डॉ. व्ही.के. मोरेजी ने अनुमती दे दी।

प्रस्तुत प्रबन्ध ` प्रेमचन्द की कहानियों में चित्रित किसान जीवन ` में प्रेमचन्दजी की कहानियों में चित्रित किसान जीवन के विविध पक्षों पर प्रकाश डालने की कोशिश की है। प्रबन्ध के प्रारंभ में कुछ प्रश्न मन में उठ खड़े हुए, वे प्रश्न थे -

१) प्रेमचन्दजी ने अपनी कहानियों में किसान जीवन के चित्रण को इतना विस्तृत स्थान क्यों दिया ?

२) रात-दिन कष्ट करनेवाले किसान की तरक्की क्यों नही होती ?

३) किसान के पतन के लिए वह स्वयं जिम्मेदार है या और कोई दूसरा व्यक्ति या समाज या समाज का विशिष्ठ वर्ग ?

४) किसान को सामाजिक प्रतिष्ठा क्यों नहीं मिलती ?

५) किसान धार्मिक क्यों रहता है ?

६) किसानों के जीवन में आर्थिक दैन्य क्यों रहता है ?

७) किसानों का राजनीति से कहाँ तक सम्बन्ध रहता है ?

इन सवालों का हल ढूँढने के लिए मैंने प्रेमचन्दजी की कहानियों में चित्रित किसान जीवन का विवेचन करने की कोशिश की है ।

प्रस्तुत लघु-शोध प्रबन्ध पाँच अध्यायों में विभाजित है ।

प्रस्तुत प्रबन्ध के प्रथम अध्याय में प्रेमचन्दजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर संक्षेप में प्रकाश डाला है । साहित्यकार का व्यक्तित्व उसकी रचनाओं में झलकता है । प्रेमचन्द जी के व्यक्तित्व की स्पष्ट छाप उनके साहित्य में मिलती है । इसलिए मैंने प्रेमचन्दजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला है ।

द्वितीय अध्याय में प्रेमचन्द पूर्व कहानी और प्रेमचन्दयुगीन कहानी पर संक्षेप में प्रकाश डाला है । इसमें हिन्दी की प्रारंभिक कहानी से लेकर प्रेमचन्द युग तक आते-आते कहानी विधा का किस प्रकार विकास हुआ इसका विवेचन किया है । इस अध्याय में प्रारंभिक कहानियों के विषय, उनकी विशेषताएँ तथा प्रतिनिधि कहानीकारों का उल्लेख किया है । अध्याय के उत्तरार्ध में प्रेमचंद युगीन कहानी में प्रेमचन्दजी के योगदान की चर्चा की है ।

तृतीय अध्याय में प्रेमचन्दकालीन परिस्थितियों पर प्रकाश डाला गया है। युगीन परिस्थितियों से साहित्य कार प्रभावित होता है। प्रेमचन्दजी के साहित्य पर भी युगीन परिस्थितियों का प्रभाव दिखायी देता है। इसलिए युगीन परिस्थितियों का संक्षेप में विवेचन दिया है।

चतुर्थ अध्याय में ` प्रेमचन्द की कहानियों में चित्रित किसान-जीवन का विस्तृत विवेचन किया गया है। उनही जैसे गाँव में पैदा होने के कारण प्रेमचन्दजी बचपन से ग्रामीण जनजीवन से परिचित थे। किसानों का दु:ख उन्होंने नजदीक से देखा था। उन्होंने किसान जीवन के विविध पक्षों पर विस्तार से प्रकाश डाला है। मैंने उनकी कहानियों में चित्रित किसान जीवन के सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक पक्ष पर प्रकाश डाला है।

पंचम अध्याय उपसंहार इस लघु-शोध प्रबन्ध का सार-रूप है। इसमें प्रेमचन्द की कहानियों में चित्रित किसान जीवन के बारे में जो भी निष्कर्ष प्राप्त हुए उनका विवरण दिया है।

प्रबन्ध के अंत में सहायक संदर्भ ग्रंथों की सूची दी गयी है। साथ में प्रत्येक ग्रंथ का प्रकाशक एवं संस्करण भी दिया गया है।

इस लघु शोध प्रबन्ध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष सहायता करनेवाले तथा प्रोत्साहित करनेवाले हितचिंतको के प्रति कृतज्ञता-भाव प्रकट करना मेरा प्रथम कर्तव्य है।

जीवन में कुछ ऋण ऐसे होते है, जिनसे उऋण होना संभव नहीं होता और न उऋण होने की इच्छा ही होती है। इसी तरह का ऋण मुझपर है- श्रध्देय गुरूवर्य डॉ. के.पी. शहा जी की कृपा का। प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध डॉ. के.पी. शहा जी के आशीर्वाद एवं कृपा पूर्ण सदाम निर्देशन में लिखा गया है। इसे मैं अपना सौभाग्य समझता हूँ। सातत्यपूर्ण

व्यस्तता के बावजूद आपने निरंतर प्रोत्साहन एवं प्रेरणा देकर मेरी अत्यन्त सहायता की है। इस शोध विषय के बारें में जब जब संभ्रम निर्माण हुआ, तब तब आपने मुझे हतोत्साह होने नहीं दिया। आपके आत्मीयतापूर्ण निर्देशन ने इस शोध-कार्य के अन्तर्गत आनेवाली कठिनाईयों को कभी अनुभव नहीं होने दिया। आपकी इस सहृदयता का एहसास मुझे हमेशा रहेगा। इस कार्य के दौरान आपसे मुझे जो स्नेह, प्रेरणा और आत्मीयता मिली, वह आजीवन भुलायी नहीं जा सकती। आपके इस स्नेह प्रेरणा और आशीर्वाद का मैं सदैव अभिलाषी रहूँगा।

आदरणीय गुरुवर्य डॉ. व्ही.के. मोरे, डॉ. व्ही.व्ही. द्रवीड प्रा. एस.बी. कणबरकर, प्रा. मुजावर, प्रा. वेदपाठक, प्रा. त्विले, प्रा. हिरेमठ, प्रा. रजनी भागवतजी का भी आशीर्वाद मेरे साथ रहा, उनके प्रति सविनय आभार प्रकट करता हूँ।

मेरे कणकवली कॉलेज के प्राचार्य एस.एल. परब, प्रभारी प्राचार्य आर.एम. माने, मेरे सहयोगी प्रा. तुकाराम टाकळे, प्रा. विलास पाटील, प्रा. पी.बी. पाटील, प्रा. सुधीर मोसले, प्रा. खंडेराव कोत्वाल, प्रा.सुहास देशपांडे, प्रा. बाळासाहेब बोंगार्डे, प्रा. संभाजी पाटील, प्रा. बबनराव सामकर, प्रा. अनिल फराकटे, प्रा. बाबासाहेब माळी, प्रा. शंकर वेल्हाळ तथा अन्य सहयोगी प्राध्यापकोंने भी सहयोग दिया उनकी सहायता के लिए मैं उनका भी आभारी हूँ।

मेरे गुरू प्रा. एन.आर. रानमरे, तथा प्रा. माहूफ मुजावरजी ने सामग्री संकलन आदि में निस्वार्थ सहायता की, मेरे पत्रकार भाई अशोक घोरपडे तथा परिवार के सभी सदस्यों ने मुझे निरंतर प्रोत्साहित किया, उनके सहयोग के कारण ही मैं इस कार्य को पूर्णत्व दे सका।

शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथालय के प्रति विशेषत: ग्रंथपाल, सिनियर लायब्ररीयन तथा अन्य सहायकों की सहायता के प्रति आभारी हूँ। कणकवली कॉलेज के ग्रंथपाल श्री. सर्जेराव माळी तथा सहायक काळसेकरजी की सहायता के प्रति भी आभारी हूँ।

इस शोध प्रबन्ध को अति शीघ्र एवं सुचारू रूप से टंकलिखित रूप देने का काम श्री. कवडेजी ने किया तथा प्रबन्ध को जिल्दसाज चढ़ाने का काम श्री. एच. के. जोशीजी ने बड़ी आत्मीयता से किया, इनके प्रति भी आभार प्रकट करता हूँ।

अंत में, उन सभी विद्वानों, समीक्षकों, गुरूजनों, के प्रति मैं आभार प्रकट करता हूँ जिनकी कृतियों की सहायता से मैं यह शोध कार्य पूर्ण कर सका।

इसके साथ ही मैं अपना यह लघु शोध-प्रबन्ध अत्यन्त विनम्रता के साथ आपके अवलोकन के लिए सम्मुख रखता हूँ।

(लालासाहेब धोरपडे)
शोध-छात्र

कोल्हापुर
दिनांक : 25-11-91